Dr.Raman Kumar Thakur assistant professor(Guest)Department of Economics, D.B.College jaynagar. Madhubani.

Class-B.A.part-1(Gen.&Subsidiary.)Date-19-09-2020.Lecture n.-21.

Topic:- मुद्रास्फीति और आर्थिक विकास(Inflation and Economic Growth)

:- मुद्रास्फीति की परिभाषा :- 'काउथर' के अनुसार," मुद्रास्फीति वह परिस्थिति है जिसमें मुद्रा का मूल्य गिरता है और वस्तुओं की कीमतें बढ़ती है।"

प्रोफेसर 'हार्टे' के अनुसार " मुद्रा स्फीति वह स्थिति है जिसमें बहुत अधिक मुद्रा मिलकर कम वस्तुओं का पीछा करती है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि मुद्रा स्फीति कीमत स्तर के निरंतर बढ़ने की प्रक्रिया है। मुद्रा स्फीति और आर्थिक विकास का विषय शुरू से ही विवादास्पद रहा है कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार मुद्रा स्फीति आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक है, तथा कुछ अर्थशास्त्रियों का मत है कि मुद्रा स्फीति के कारण आर्थिक विकास की गति धीमी हो जाएगी इसलिए मुद्रास्फीति आर्थिक विकास के

लिए उचित नहीं है इस संबंध में किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए यह आवश्यक है कि इन दोनों मतों का विस्तृत अध्ययन किया जाय, जो इस प्रकार से हैं:-

1) अमौद्रीक क्षेत्र (Non monetised Sector):- अर्थ विकसित देशों में एक विशाल अमौद्रीक क्षेत्र पाया जाता है विकास के साथ-साथ अमौद्रीक क्षेत्र का मौद्रिकीकरण होता जाता है एवं अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मांग में वृद्धि होती है जिसकी पूर्ति स्फीतिक वित्त द्वारा की जा सकती है ।

2) विनियोग को प्रोत्साहन (Encouragement to investment):- मुद्रा-स्फीति काल में जनता को अधिक पूंजी विनियोग करने का अवसर मिलता है जिससे नए-नए उद्योगों की स्थापना होती है व्यवसाय की उन्नति होती है तथा रोजगार में वृद्धि होती है।

3) पूंजी निर्माण का साधन(Source of Capital formation) :- मुद्रास्फीति के फल स्वरुप देश में बलात बचत(Forced Saving) संभव हो जाती है कीमतें अधिक होने के कारण अधिकांश लोग बहुत सी वस्तुओं का उपयोग नहीं कर पाते इस प्रकार वास्तविक उपभोग कम हो जाता है तथा वास्तविक बचत में वृद्धि हो जाती है इस वृद्धि का उपयोग पूंजी निर्माण के लिए किया जा सकता है।

4) आय का पुन'वितरण(Redistribution of income):- मुद्रा स्फीति के कारण आय का पुन'वितरण समाज के उस वर्ग, जैसे कृषक, उद्योगपति, व्यापारी आदि के पक्ष में होने लगता है जिसमें बचत करने की शक्ति अधिक होती है। मुद्रास्फीति के ही कारण उन लोगों की आय में कम वृद्धि होती है जिनमें बचत करने की शक्ति कम होती है।

5) विदेशी पूंजी को प्रोत्साहन(Encouragement to foreign Capital):- यह निश्चित है कि मुद्रास्फीति की अवस्था में लाभ की मात्रा में वृद्धि होती है फल स्वरुप बढ़ते हुए लाभ विदेशियों को अपनी पूंजी इन देशों में विनियोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जिससे विकास कार्य को बल मिलता है।

*** निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि मले स्थिरता के साथ अधिक विकास अर्ध विकसित देशों का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए परंतु मूल्य स्थिरता से हमारा अभिप्राय यह नहीं है कि मूल्य सदा एक ही स्तर पर स्थिर रहे।**